

12. समय

- सिया राम शरण गुप्त

अभी समय है, अभी नहीं कुछ भी बिगड़ा है,

देखो अभी सुयोग तुम्हारे पास खड़ा है।

करना है जो काम उसी में चित्त लगा दो,

आत्मा पर विश्वास करो, सन्देह भगा दो॥

पूर्ण तुम्हारा मनोऽभीष्ट क्या कभी न होगा,

होगा तो बस अभी, नहीं तो कभी न होगा।

देख रहे हो श्रेष्ठ समय के किस सपने को,

छलते हो यों हाय! स्वयं ही क्यों अपने को॥

आवेगा क्या समय, समय तो चला जा रहा,

देखो जीवन व्यर्थ तुम्हारा छला जा रहा।

तो पुरुषों की भाँति खड़े हो जाओ अब भी,

करके कुछ जग बीच बड़े हो जाओ अब भी॥

उद्योगी को कहाँ नहीं सुसमय मिल जाता,

समय नष्ट कर नहीं सौम्य कोई भी पाता।

आलस हो ये करा रहा है सभी बहाने,

जो करना है करो अभी, कल हो क्या जाने॥

पा सकते फिर नहीं कभी तुम इसको खो के,

चाहो तुम क्यों नहीं चक्रवर्ती भी हो के।

कर सकता कब कौन द्रव्य है इसकी समता,

फिर भी तुमको नहीं ज़रा भी इसकी ममता॥

समय ईश का दिया हुआ अति अनुपम धन है,

यही समय ही अहो! तुम्हारा शुभ जीवन है।

इसको खोना स्वयं स्वजीवन का खोना है,

खोकर इसको आयु स्वल्प स्वयमपि होना है॥

तुच्छ कभी तुम नहीं एक पल को भी जानो,
 पल-पल से ही बना हुआ जीवन को मानो।
 इसके सद्व्ययरूप नीर-सिञ्चन के द्वारा,
 हो सकता है सफल जन्म-तरु यहाँ तुम्हारा।

ऐसा सुसमय भला और कब पाओगे,
 खोकर पीछे इसे सर्वथा पछताओगे।
 तो इसमें वह काम नहीं क्यों तुम कर जावो,
 हो जिसमें परमार्थ तथा तुम भी सुख पावो ॥

